B.A. PART- 1
हिन्दी (प्रतिष्ठा) - प्रथम पत्र
हिन्दी साहित्य का इतिहास भाग-2

प्रश्न: आदिकालीन साहित्य की परिस्थितियों या पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालें?

उत्तर- भाग-1 का शेषभाग -

(ग) धार्मिक परिस्थितियाँ

इस काल में वैदिक और पौराणिक धर्म के साथ बौद्ध एवं जैनी धर्म का अपने नए रूप में प्रचार हुआ था।

1. बौद्धों की अनेक शाखाएँ वज्रयान, सहजयान, मंत्रयान आदि का विकास हुआ जिनके अनुयायी धर्म के वास्तविक आदर्श को छोड़कर सिद्धिलाभ के लिए गुप्त साधनाओं में लगे हुए थे। आचार-विहीनता, चमत्कार-प्रदर्शन तथा भोग-विलास इनकी विशेषताएँ थी।
2. बौद्धों के अतिरिक्त वैष्णवों के पाँचरात्र, शैवों के पाशुपत, कालमुख, कापालिक आदि सम्प्रदायों में भी बौद्ध सम्प्रदाय की पूजा-पद्धति का अनुकरण होने लगा।
3. गुरु गोरखनाथ ने नाथयोगियों में संयम और सदाचार की प्रतिष्ठा की और योग का महत्व प्रतिपादित किया।
4. राजपूतों में ब्राह्मणों और पुरोहितों का मान था।
5. रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य आदि ने अपने-अपने सिद्धान्तों का प्रचार भी इसी युग में किया, परन्तु उनका अनुकरण बाद में भक्ति-साहित्य में हुआ।
6. इसी युग में मुस्लिम धर्म का भारत में आगमन हुआ, परन्तु उसका कोई विशेष प्रभाव इस युग के साहित्य पर नहीं है।

इस प्रकार सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश की तरह इस काल का धार्मिक वातावरण भी दूषित था।

घ (साहित्यिक परिस्थितियाँ)

1. इस काल में संस्कृत, अपभ्रंश तथा हिन्दी-साहित्य का विकास हुआ।
2. संस्कृत में ज्योतिष, दर्शन, स्मृति आदि के ग्रंथों पर टीकाएँ लिखी गई।
3. संस्कृत-कवियों में चमत्कार-भावना एवं पाण्डित्य-प्रदर्शन की प्रवृत्ति रही है। – जैसे – श्रीहर्ष के 'नैषध-चरित्र' में।
4. कल्हण की 'राजतरंगिणी' ऐतिहासिक ग्रंथों में अमूल्य है।
5. अपभ्रंश में सिद्धों, नाथों तथा जैनियों का धार्मिक साहित्य मिलता है।
6. विद्यापति ने लौकिक शृंगार-प्रधान तथा प्रशस्तिमूलक रचनाएँ लिखीं।
7. डिंगल तथा पिंगल में चारण और भाट कवियों के लिखे रासो काव्य तथा अन्य ग्रंथ मिलते हैं।

पता:
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग-हिन्दी S.R.A.P.C,
B.R.A.B.U.
MUZAFFARPUR
मो० नं०- 7909046087
दिनांक – 13.02.2023